Indian J. Soc. & Pol. 06(01):77-79:2019 **ISSN: 2348-0084(P)**
ISSN: 2455-2127(O)

वैश्विक परिदृश्य में आतंकवाद का बदलता हुआ स्वरूप : एक अध्ययन

वेद प्रकाश सिंह'[1]

[1]''शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर, विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

आतंकवाद समकालीन युग की सर्वाधिक ज्वलन्त समस्या है। मूलरूप से आतंकवाद, हिंसा, अपहरण इत्यादि के द्वारा किसी निहित लक्ष्य की प्राप्ति का साधन है। आज आतंकवाद एक अन्तर्राष्ट्रीय अभिशाप बन गया है। आज विश्व का उद्देश्य भिन्न–भिन्न देशों और समाज में अलग–अलग हो सकता है परन्तु राजनैतिक दृष्टि से इसका मुख्य उद्देश्य राज्य में सत्ता को अस्थिर बनाना और जनता में भय उत्पन्न कर देना है, ताकि सरकार आतंकवादियों की माँगों को मानने के लिये विवश हो जाये। आतंकवादी संगठन अपने गतिविधियों को संचालित करने के लिये विभिन्न स्रोतों एवं माध्यमों से अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करते रहे है। वर्तमान समय में इनके पास विभिन्न प्रकार के वित्तीय स्रोत हैं, जिनमें एक प्रमुख स्रोत नारकोटिक एवं मादक द्रव्यों की तस्करी से जुड़ा है। मादक द्रव्यों की तस्करी में आतंकवादी भी मदद कर रहे हैं फलस्वरूप उन्हें पर्याप्त मात्रा में धन प्राप्त हो रहा है और इस धन से वे राष्ट्रों के समक्ष नई चुनौती प्रस्तुत कर रहे हैं जो विश्व के लिये गम्भीर चिन्ता का विषय है।

KEYWORDS: *परोक्ष युद्ध, आतंकवाद, गैर पारंपरिक सुरक्षा खतरे*

आतंकवाद एक ऐसा तरीका है जिसके द्वारा कोई संगठित समूह अथवा दल अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हिंसा का योजनाबद्ध रूप से प्रयोग करता है। ''द्विध्रुवीय विश्व के राष्ट्रों के बीच आपसी वेमनस्य और उनकी एक दूसरे को उखाड़ फेंकने की गलत चेष्टाओं ने ही आज इन आतंकवादी संगठनों को संगठित करने और उन्हें सुदढ़ रूप से स्थापित करने में सहयोग प्रदान किया।'' ''इन राष्ट्रों ने अपने–अपने पक्ष मजबूत करने के उद्देश्य से इन संगठनों को न केवल हथियार बल्कि प्रशिक्षण, आर्थिक सहायता और अन्य सुविधाएँ दिला कर अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त की, बाद में उनकी इन्हीं नीतियों ने अमेरिका और रूस को आतंकवाद की धधकती आग में झोंक दिया।(शरद,2005) आज आतंकवादी संगठनों के वित्तीय स्रोतों का स्वरूप बदल गया है, जिसमें आतंकवादी संगठन अपराधी और नशीले पदार्थों के तस्करों का एक नयी समीकरण उभर कर हमारे सामने आ गया है।

वर्तमान समय में आतंकवादी संगठनों के पास विभिनन प्रकार के वित्तीय स्रोत है और ऐसा होना स्वाभाविक भी है। जिस प्रकार आतंकवाद के स्वरूप में निरन्तर गतिशीलता पायी जाती है, उसी तरह इन आतंकवादियों के पास भी विभिन्न स्रोतों में समय के हिसाब से अन्तर अना स्वभाविक है। इनके वित्तीय स्रोतों में हमेशा से एक प्रकार की गतिशीलता पायी जाती है, जिसमें कभी एक तत्व की तो कभी कहीं दूसरे स्रोत की प्रधानता रहती है।

वर्तमान समय में आतंकवाद का सम्बन्ध नारकोटिक (नशीले पदार्थों) से जुड़ना भी माना गया है। ये दोनों अपराध ऐसे है, जिनमें तुरन्त पाने की चाहत है, इसमें पैसा, प्रसिद्धि, ओहदा आदि सभी शामिल है। मादक द्रव्यों का सेवन सभ्य समाज में तो क्या खूब होता रहा है। थकान दूर करने, मौज मस्ती करने या फिर दवाइयों के रूप में इनका प्रयोग आदि काल से होता रहा है, क्योंकि जंगल से उपलब्ध पेड़–पौधों, जड़ी–बूटियों आदि से इसका निर्माण आसानी से किया जा सकता है। लेकिन आधुनिक समाज, विशेषकर युवा वर्ग में इसका प्रयोग ज्यादा और गलत ढ़ग से हो रहा है, क्योंकि इसका प्रयोग करने वाला व्यक्ति इनका गुलाम बनकर रह जाता है। अगर यह न मिले तो आदत डाल चुका व्यक्ति मुर्दा समान हो जाता है। इस तरह का अविवेक पूर्ण उपयोग शारीरिक और मानसिक क्षति के साथ–साथ सामाजिक मूल्यों पर भी घात कर रहा है और युवाओं में अपराधी नीति विधियों को बढ़ावा दे रहा है।

मादक द्रव्यों का चलन समाज में पहले इतना नहीं था, किन्तु वर्तमान समय में इस क्षेत्र में जो अधिक पैसा है, और आसान पैसा है, जिससे आकर्षित होकर लश्करों और माफियाओं के मध्य आपस में विश्वव्यापी जाल फैल चुका है। ''मादक द्रव्यों का व्यापार विश्व के किसी भी समाज में अच्छा नहीं समझा जाता और इसके अवैध होने के कारण इसे कोई सरकारी मान्यता प्राप्त नहीं है।''(बाथम,2004 पृ0 154) फलस्वरूप यह धन्धा चोरी–छुपे होता है और अपराधियों के गिरोह इसमें संलग्न होते है। ''यह एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें इनका व्यापार करने वाला, सेवन करने वाला, और सरकारी तंत्र (पुलिस प्रशासन, गुप्तचर एजेन्सियाँ आदि) इस अपराध से जाने अनजाने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े होते है।''(वही)

1: Corresponding Author

जब मादक द्रव्यों के तस्करों और अपराधियों का गठजोड़ हो जाये तो इनके आपस की दोस्ती कोई आश्चर्य की बात नहीं है। कुछ पड़ोसी राष्ट्रों के अलावा कुछ अन्य सम्पन्न राष्ट्र भी इस धन्धे से प्राप्त धन का आतंकी गतिविधियों के लिए प्रयोग करते रहे है। इस धन का एक बड़ा हिस्सा हथियारों के अवैध निर्माण और अवैध व्यापार में लगा हुआ है, हथियारों की तस्करी के बिना आतंकवाद का अस्तित्व खतरे में रहता है। अतः स्वतः ही इनमें एक प्रकार त्रिकोणात्मक सम्बन्ध बन जाता है, जो एक दूसरे के पूरक है।

यही त्रिकोणात्मक सम्बन्ध (मादक द्रव्य तस्कर, आतंकवादी और उनका संगठन तथा अपराधियों और हथियार के व्यापारियों) आतंकवादी संगठनों के मजबूत वित्तीय आधार बने हुए है, जिसमें तीनों तत्वों को लाभ है। विशेषज्ञों द्वारा इस त्रिकोणात्मक सम्बन्ध को एक अलग दृष्टि से देखते हुए इसे 'नारको टेररिज्म' के रूप में वर्तमान समय में व्याख्यायित किया जा रहा है। मादक द्रव्यों की तरस्की में आतंकवादी भी मदद कर रहे है अन्य अपराधों और हथियार के तस्करों का सम्बन्ध भी दोनों से है। आतंकवादियों, अपराधियों और ड्रग्स माफिया के सम्बन्धों के हजारों उदाहरण दिए जा सकते है।

इस आतंकवाद को भारत के सन्दर्भ में देखें तो पायेंगे कि पड़ोसी राष्ट्रों का रवैया और हमारी भौगोलिक स्थिति, इस तरह के दैत्य पनपने के लिए सबसे उपयुक्त है। ''वर्मा, थाईलैण्ड और लाओस के सुनहरे त्रिभुज''(सावंत,1999) के हम नजदीक है और साथ ही साथ भारत'' पाकिस्तान और अफगानिस्तान के सुनहरे चन्द्र''(वही) के हम भाग है। तस्कर इसे विदेशी बाजार मुहैया कराने में अहम भूमिका निभाते है। स्पष्ट है कि हमारे पड़ोसी राष्ट्र और आतंकवादी इसी स्थिति को भुनाना चाहते है, जो आसान है और वे कर भी रहे है। बड़े स्तर पर मादक पदार्थ के तस्करों का उपयोग आतंकवादी गतिविधियों की मदद करने, हथियार उपलब्ध कराने और पैसा जुटाने में हो रहा है। इस आतंकवाद का मूल आर्थिक स्रोतों को इन्हीं इलाकों में खोजकर इसी समय नष्ट करना, आतंकवाद की जड़े काटने के समतुल्य है।

पाकिस्तान और अफगानिस्तान भी इन द्रव्यों को तस्करी के गढ़ है।(सिंह,2000) भारत और पाकिस्तान तस्करों का गठजोड़ भी मजबूत है। पाकिस्तान में तो इनके सम्बन्ध सभी राजनीतिक दलों और उनके प्रभावशाली राजनेताओं के साथ–साथ पाकिस्तान की खुफिया एजेन्सी आई.एस.आई. से भी है और कोई सरकार आये पर इन पर कोई फर्क नहीं पड़ता। ''भारत की तुलना में पाकिस्तान और अफगानिस्तान की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर रही है कि उन्हें आतंकवादियों का प्रशिक्षण देना, शरण देना, और फिर भारत या अन्य देशों में भेजकर उनका व्यय उठाना एक बड़ा ही मंहगा सौदा लगने लगा। ऐसी स्थिति में खुद पाकिस्तान हुक्मरानों और पाकिस्तानी खुफिया एजेन्सी आई.एस.आई. की सह पर नारकोटिक्स के जरिए पैसा एकत्र करना और आतंकवादियों को मदद करना एक सल और त्वरित उपाय के रूप में सामने आया है। इन्हीं नशीले पदार्थों की तस्करी के जरिए पैसा एकत्र करने की अपराधियों को छूट दी गई थी, कि वे इस जहर को पड़ोसी राष्ट्रों में भेजे और उससे पैसा कमाए। इस पैसे का कुछ भाग आतंकवादी गतिविधियों के लिए देना एक शुल्क के तौर पर अनिवार्य हो गया। पैसा के अलावा नारकोटिक्स अपराधियों का उपयोग कर उनके समान के साथ विस्फोटक सामग्री और हथियारों को सीमा के पार भेजना और मनचाही जगह और व्यक्ति के पास पहुँचाना भी इस तरीके से बड़ा आसान हो गया है।''(जनसत्ता, 28 सितम्बर 2004)

पाकिस्तानी खुफिया एजेन्सी आई.एस.आई. की मदद से कई लोग इस धन्धे में लिप्त है। आई.एस.आई. अपनी आर्थिक स्वतन्त्रता को कायम रखने के लिए 'ड्रग्स' की तस्करी करता है और अर्जित धन का उपयोग अपने आपरेशनों में करता है। आई.एस.आई. ड्रग्स की तस्करी में लिप्त है जिसको खुद नवाज शरीफ ने 1994 में स्वीकार किया था, जब वह विपक्ष के नेता थे नवाज शरीफ ने वाशिंगटन पोस्ट को एक साक्षात्कार में कहा था कि ''जनरल असलम बेग और आई.एस.आई. प्रमुख लेफ्टिनेट जनरल दुर्रानी ने उनसे कहा था कि अफगानिस्तान आपरेशन के लिए धन की आवश्यकता हो जो ड्रग्स सौदा कर के प्राप्त किया जायेगा। वाशिंगटन पोस्ट ने इस समाचार को 1994 के अंक में प्रकाशित किया था। एक दूसरे घटनाक्रम में पाकिस्तान वायुसेना के स्क्वैड्रन लीटर फारूक 1997 में न्यूयार्क में 2 किलो हिरोइन के साथ पकड़े गये थे।''(सिंह,2001,पृ029–31)

एक सर्वेक्षण के अनुसार आई.एस.आई. प्रति माह लाखों रूपया कश्मीर के क्रिया–कलापों पर खर्च करता है। इस धन से आतंकवादी संगठनों का खर्च आतंकवादियों का वेतन, गुप्त रेडियों का संचालन आदि सम्मिलित हें विश्वसनीय रिपोर्ट के अनुसार ''सुरक्षा बलों एवम् प्रमुख व्यक्तियों पर आक्रमण के लिए अलग से प्रोत्साहन ईनाम दिया जाता है। इन गतिविधियों में आई.एस.आई. अपनी सम्पत्ति 10 से 15 प्रतिशत खर्च करता है, और बाकी सब धन इसे अन्य इस्लामी समूह के देशों से प्रदान होता है। अन्य इस्लामी संगठन जिनसे आई.एस.आई. को धन मिलता है, उनमें प्रमुख है, पाकिस्तान सरकार का अल–खिदमत वेलफेयर सोसाइटी, इस्लामिक जमात–ए–तुलबा, जमात–ए–अहले सुन्नत, जमात–ए–इस्लामी पाकिस्तान, एक्शन कमेटी, कश्मीर–रिलीफ, कमेटी, कश्मीर एजूकेशनल एण्ड रिलीफ सोसाइटी, करकज–दावा–बल, इरशाद, पाकिस्तान मुस्लिम लीग, मध्य एशिया के कई देशों, तथा ब्रिटेन और अमेरिका में कार्यरत, इस्लामिक संगठनों से इन आतंकवादी संगठनों को प्रत्यक्ष रूप से धन मुहैया होता रहा है।''(वही,पृ031)

पाकिस्तान द्वारा अफगानिस्तान में इसी तरह नशीले पदार्थों के व्यापार का उपयोग किया गया और वहाँ पर भी उनके

सैन्य बलों पर इस कार्यों में सम्बद्ध होने के लिए उंगलियाँ उठती रहती है। यहाँ तक की कुछ गिने–चुने अफसरों और अन्य लोगों ने पाकिस्तान में इसका विरोध करना चाहा तो उन्हें मौत के घाट उतारकर उस कहानी को आगे ही नहीं बढ़ने दिया गया। दरअसल मादक द्रव्यों के तस्कर और उनका विश्व व्यापी संगठन इतना मजबूत है कि उनके सामने कुछ सरकारों का अस्तित्व ही नहीं है, वे सरकारों के उत्थान एवं पतन में निर्णायक भूमिका निभाते है। ''वर्तमान में इन तस्करों और आतंकवादियों का गठजोड़ समस्त राष्ट्रों के समक्ष नई चुनौती प्रस्तुत कर रहा है। तस्करों और आतंकवादी संगठनों को एक बड़े ही रोचक ढंग से लाभ अर्जित करने और उस काले धन को बड़ी योजना बद्ध ढ़ग से सफेद धन में बदलकर अपने संगठनों और अपनी योजनाओं को अंजाम देते है। इसे उदाहरण के तौर पर देखा जा सकता है कि तस्करी से प्राप्त लाभ की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभाजन होता है।'' ''भारत में अफीम की खरीद का सरकारी भाव 250 से 300 ग्राम है तो काले बाजार में तस्कर उसे 5000 से 15000 रूपये प्रति ग्राम ही दर से खरीदते है। यही कच्दी अफीम हांगकांग पहुँचने पर 2800 रूपये से 4160 रूपये में बिकती है। जब कच्ची अफीम के मुनाफे का यह आलम हे तो हिरोइन औश्र कोकीन के उत्पादन और व्यापार से प्राप्त मुनाफे का सिर्फ अंदाज ही लगाया जा सकता है। मादक द्रव्यों का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार 500 अरब अमेरिकी डालर का है, जो अमेरिकी मुद्रा के चलन का दुगुना है। मादक द्रव्यों की अवेध तस्करी से तस्कर न सिर्फ अथाह धन सम्पत्ति बनाते है वरन् व्यवस्था में बैठे भ्रष्ट अधिकारी और राजनेताओं पर भी यह धन खुलकर लुटाया जाता है।''(सिंह और चंदेल,2000पृ039) ''यह काला धन शीघ्र ही सफेद धन में परिवर्तित कर दिया जाता है और भ्रष्ट तस्कर शीघ्र ही समाज का सफल व्यवसायी और सभ्रान्त व्यक्ति देखने लगता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तस्करी से प्राप्त काला धन कैसे सफेद धन में तब्दील हो जाता है और इससे आतंकवादी संगठनों, नेताओं, तस्करों और अपराधियों का एक चतुष्कोणीय गुट बन जाता है।(वही)

आतंकवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अवैध रूप से प्राप्त धन के स्रोतों और आय के अवैधानिक उपयोग कुछ इस प्रकार परिवर्तित कर छुपाया जाता है कि यह आय वैधानिक स्रोतों से प्राप्त आय दिखने लगती है। इस प्रकार काले धन को सफेद धन में परिवर्तित किया जाता है। विश्व के कुछ क्षेत्रों का वैधानिक और आर्थिक पर्यावरण धन परिवर्तन उद्योग के लिए सर्वाधिक फायदेमन्द होता है। मारीशस, नीदरलैण्ड, एन्टीलस, पनामा और स्विटजरलैण्ड धन परिवर्तन के लिए सुरक्षित आश्रय स्थल है। इन बैंको में गुप्तता कानून का कड़ाई से पालन किया जाता है।'' ''इनकी देखा–देखी पाकिस्तान ने भी 1991 में तस्कर–मित्रवत विदेशी मुद्रा, विनिमय व्यवस्था की शुरूआत की। श्रीलंका इस क्षेत्र में पहले से ही विख्यात है।''

सन्दर्भ

शरद, अविनाश (2005), आतंकवाद–लाइलाज बनती त्रासदी, *इण्डियन एक्सप्रेस,* दैनिक अखबार, लखनऊ, 28 जुलाई, 2005

वाथम, मनोहर लाल शिवचरण विश्वकर्मा, (2004), *आतंकवाद की चुनौती और संघर्ष,* दिल्ली, मेघा बुक पृ0154

सावंत, सुधीर सावंत,(1999) *ग्रोव्रिमिनेस ऑफ नारको–टेरिरिज्म इन एशिया आक्रोश* 2 (2) 1999 (जनवरी), पृ0 20

सिंह, निशान्त सिंह,(2000) *अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद,* सन्मार्ग प्रकाशन, प्रथम संस्करण

नशीले पदार्थों का तस्कर, पाकिस्तान, *जनसत्ता,* नई दिल्ली, सम्पादकीय, पृ0 28, सितम्बर 2004

सिंह, राम नरेश प्रसाद (2001) *आई.एस.आई. का आतंक* पटना, पब्लिकेशन,पृ0 29–31

सम्पादकीय, *टाइम्स ऑफ इण्डिया,* प्रकाशन दिल्ली, 2 नवम्बर, 2000,

सिंह, अवधेश कुमार और ओम प्रकाशन चन्देह,(2000) *भारत में मादक द्रव्य, आय प्रवृत्ति एवम् पुर्नवास,* न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, पृ0 39